अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय

रीवा (म.प्र.)

एवं

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली

(महाकौशल प्रांत)

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

''चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास भारतीय ज्ञान परम्परा के परिप्रेक्ष्य में''

दिनांक : 18, 19 एवं 20 अगस्त 2025 तदनुसार भाद्रपद कृष्णपक्ष दशमी–एकादशी–द्वादशी, विक्रम संवत 2082

समय : 11:30 बजे पूर्वान्ह, स्थान : पंडित शम्भूनाथ शुक्ल सभागार

परिचय :-

भारत की समृद्ध ज्ञान परम्परा, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों की नींव पर आधारित रही है, जिसने न केवल व्यक्ति को आन्तरिक रूप से सशक्त किया है, बल्कि समाज को भी एक सतत विकास की दिशा में अग्रसर किया है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक भारतीय शिक्षा प्रणाली ने "सा विद्या या विमुक्तये" के सिद्धांत पर चलते हुए ज्ञान को केवल सूचनाओं का संचयन न मानकर, जीवन को दिशा देने वाली साधना के रूप में प्रतिष्ठित किया है। आज जब भारत आत्मनिर्भरता एवं वैश्विक नेतृत्व की दिशा में अग्रसर है, तब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों को समकालीन संदर्भों में पुनर्स्थापित करने का सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। यह नीति व्यक्तित्व निर्माण, चरित्र विकास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ शिक्षा को जोड़ने का कार्य कर रही है।

इन्हीं विचारों की व्यापक पड़ताल एवं मंथन हेतु ''चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास भारतीय ज्ञान परम्परा के परिप्रेक्ष्य में'' विषय पर त्रि दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यशाला विद्वानों, शिक्षाविदों, शोधार्थियों एवं नीति निर्माताओं को एक साझा मंच प्रदान करेगी, जहाँ वे भारतीय शिक्षा की जड़ों उसके नैतिक आयामों एवं नई शिक्षा नीति की व्यवहारिक चुनौतियों और संभावनाओं पर विमर्श कर सकेंगे।

कार्यशाला का उद्देश्य :–

इस राष्ट्रीय कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा की मौलिक विशेषताओं, शिक्षा में चरित्र निर्माण की आवश्यकता एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल लक्ष्यों पर गहन विचार-विमर्श हेतु एक मंच प्रदान करना है। कार्यशाला का प्रयास होगा कि पारंपरिक भारतीय शिक्षा मूल्यों और समकालीन शैक्षिक दृष्टिकोणों के मध्य सेतु का निर्माण किया जाए, जिससे शिक्षा केवल आजीविका का साधन न रहकर, व्यक्तित्व के समग्र विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व का वाहक बन सके।

विशेष रूप से कार्यशाला निम्नलिखित बिंदुओं पर केन्द्रित होगी:

- भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित नैतिकता, समरसता एवं सार्वभौमिकता के तत्वों का विश्लेषण।
- शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया की पुनर्व्याख्या।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में मूल्यपरक शिक्षा की भूमिका।
- भारतीय भाषाओं, संस्कृति एवं परंपराओं की शैक्षिक पुनर्स्थापना में नीति की प्रासंगिकता।
- शैक्षणिक संस्थानों में चरित्र निर्माण को संस्थागत रूप से लागू करने की संभावनाएँ।
- शिक्षकों, छात्रों और नीति-निर्माताओं की भूमिका के विविध आयामों पर मंथन।

यह कार्यशाला एक ऐसा वैचारिक मंच सिद्ध होगी जो शिक्षा को भारत की सांस्कृतिक चेतना के अनुरूप पुनर्परिभाषित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

शोध पत्र प्रकाशन संबंधी विवरण एवं निर्देश

- कार्यशाला के लिए प्राप्त सारांश (Abstract) में से चयनित, मौलिक एवं गुणवत्ता-मानदंडों पर खरे उतरने वाले शोधपत्रों पत्रों को ISBN युक्त संपादित पुस्तक अथवा पियर-रिव्यूड जर्नल में प्रकाशन हेतु सम्मिलित किया जाएगा।
- सभी शोधपत्र हिन्दी या अंग्रेज़ी भाषा में स्वीकार्य होंगे।
- सारांश (Abstract) मूल्य आधारित, मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए।
- शोधपत्र MS Word (DOC या DOCX) फॉर्मेट में टाइप किया गया हो, Font – Times New Roman (अंग्रेज़ी) या Kruti Dev 010 (हिन्दी), फॉन्ट साइज़ 12, लाइन स्पेसिंग 1.5 रहे।
- सारांश (Abstract) की लंबाई अधिकतम 200–300 शब्द होनी चाहिए।
- साथ में लेखक का नाम, संस्थान, ईमेल आईडी और मोबाइल नंबर स्पष्ट रूप से उल्लेखित हो।
- अंतिम रूप से स्वीकृत शोधपत्रों के लेखकों को प्रकाशन हेतु नाम मात्र शुल्क देना होगा, जिसकी सूचना पृथक रूप से दी जाएगी।
- प्रकाशन हेतु केवल उन्हीं शोधपत्रों पर विचार किया जाएगा, जिनके लेखक/सह-लेखक ने कार्यशाला में सहभागिता सुनिश्चित की हो।
- सभी शोधपत्र Plagiarism (साहित्यिक चोरी) की जांच के अधीन रहेंगे।
- सभी प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने सारांश (Abstract) की सॉफ्टकॉपी निम्नलिखित ईमेल पर दिनांक 15/08/2025 से पूर्व प्रेषित करें: iksapsurewa@gmail.com

कार्यशाला में पंजीयन हेतु शुल्क:-

सभी प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण अनिवार्य है। पंजीकरण शुल्क में कार्यशाला किट, प्रमाण पत्र, अल्पाहार एवं भोजन आदि सम्मिलित है। प्रत्येक शोध आलेख के लिए अधिकतम दो लेखकों का पंजीयन मान्य होगा।

प्रतिभागी की श्रेणी	पंजीकरण शुल्क
• संकाय सदस्य / शिक्षाविद् / अकादमिक प्रतिनिधि	1500/–
• शोधार्थी / पी.एच.डी. स्कॉलर	1000/–
• स्नातकोत्तर छात्र	500/–

भुगतान विवरण (Payment Details):

बैंक खाता विवरण:	ऑनलाइन भुगतान की जानकारी:
खाता धारक का नाम: Registrar, APSU Rewa (MP) **बैंक का नाम:**Indian Bank **खाता संख्या:**[7831905108] **IFSC कोड:**[IDIB000R632] **शाखा:**APS University, Rewa (MP)	UPI ID : rapsu@indianbk
पंजीकरण प्रक्रिया: 1. ऊपर दिए गए बैंक विवरण में पंजीकरण शुल्क का भुगतान करें। 2. भुगतान की रसीद (screenshot/pdf) अपने पास सुरक्षित रखें। 3. पंजीकरण के लिए दिए गए Google Form को भरें और आवश्यक दस्तावेज़ संलग्न करें।	**पंजीकरण हेतु लिंक:** Google Form **लिंक** https://forms.gle/MMvy2DZhkjVCUbiJA

विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय:-

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (मध्य प्रदेश) की स्थापना 20 जुलाई 1968 को राज्य विश्वविद्यालय के रूप में की गई थी। यह विश्वविद्यालय भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं विन्ध्य प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री कैप्टन अवधेश प्रताप सिंह के नाम पर स्थापित किया गया है। इसे फरवरी 1972 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से मान्यता प्राप्त हुई तथा यह भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU) और राष्ट्र मंडल विश्वविद्यालय संघ (ACAU) का सदस्य है। विश्वविद्यालय में 16 शिक्षण विभागों के माध्यम से 49 पारंपरिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम स्ववित्त पोषित आधार पर संचालित किए जा रहे हैं, साथ ही नियमित स्नातकोत्तर कार्यक्रम भी उपलब्ध हैं। यह संस्थान विंध्य क्षेत्र की शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उन्नति में सतत योगदान दे रहा है। अभी हाल ही में रामायण शोधपीठ की स्थापना करने वाला यह देश का पहला राज्य विश्वविद्यालय है ।

रीवा शहर का संक्षिप्त परिचय:-

रीवा, मध्यप्रदेश के विंध्य क्षेत्र में स्थित एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से समृद्ध नगर है, जिसे विश्वभर में "सफेद शेरों की भूमि" के रूप में विशेष पहचान प्राप्त है। वर्ष 1951 में यहां पहला सफेद शेर खोजा गया था, जिसे तत्कालीन शासक महाराजा मार्तंड सिंह जू देव ने 'मोहन' नाम दिया। आज मोहन की वंश परंपरा विश्व के विभिन्न चिड़ियाघरों में संरक्षित है। रीवा का नाम 'रेवा' से लिया गया है, जो पवित्र नर्मदा नदी का प्राचीन नाम है। यह नगर 17 वीं शताब्दी से रीवा रियासत की राजधानी रहा है और स्वतंत्र भारत में विन्ध्य प्रदेश की राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित रहा है साथ ही बघेल वंश द्वारा स्थापित हजार नेत्रों वाले महा मृत्युंजय मन्दिर, गुढ़ में स्थापित लेटी हुई विशाल काल भैरव की प्रतिमा एवं कल्चुरी कालीन शिव मन्दिर विशेष रूप से दर्शनीय हैं ।

रीवा सुपारी की अनूठी हस्तकला के लिए भी प्रसिद्ध है, जिसकी बारीकी इतनी अद्वितीय है कि जोड़ दिखाई नहीं देते। आज रीवा शिक्षा और संस्कृति का उभरता हुआ केंद्र है। यहाँ सैनिक स्कूल जैसे प्रतिष्ठित संस्थान के साथ-साथ एन.टी.पी.सी., एन.सी.एल. , ए.सी.सी., जेपी सीमेंट, रिलायंस, के.जे.एस. **जैसी औद्योगिक इकाइयाँ स्थित हैं। हाल ही में स्थापित विश्व का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र गुढ़ और व्हाइट टाईगर सफारी मुकुन्दपुर ने इसे ऊर्जा एवं पर्यटन के क्षेत्र में नई पहचान दिलाई है। बाणसागर परियोजना और उसकी सिंचाई प्रणाली ने कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रयागराज, सतना, जबलपुर और वाराणसी से चार-लेन सड़कों द्वारा इसकी उत्कृष्ट संपर्क सुविधा, रीवा को एक प्रगतिशील, व्यापारिक और शैक्षिक केंद्र के रूप में स्थापित करती है।**

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास :–

(विषय, आयाम एवं कार्य विभाग)

भारतीय शिक्षा को नया विकल्प देने हेतु 24 मई 2007 को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन किया गया। भारत की शिक्षा देश की संस्कृति, प्रकृति एवं प्रगति के अनुरूप हो, इस उद्देश्य के साथ हमारा कार्य विस्तार क्रमिक रूप से होता गया। सर्वप्रथम हमने 'चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास' के साथ–साथ मूल्य आधरित शिक्षा, मातृभाषा अथवा भारतीय भाषा में शिक्षा, वैदिक गणित, पर्यावरण शिक्षा और शिक्षा में स्वायत्तता इन आधारभूत विषयों पर कार्य प्रारंभ किया। शिक्षा के इस कार्य में भाषा के कार्य के महत्व को ध्यान में लेकर भारतीय भाषा मंच एवं भारतीय भाषा अभियान नाम से दो मंचो का भी गठन किया गया है।

विषय :–

1. चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास, मूल्यपरक शिक्षा।
2. वैदिक गणित, 3. पर्यावरण शिक्षा, 4. शिक्षा में स्वायत्तता, 5. प्रबंधन शिक्षा
6. इतिहास शिक्षा की भारतीय दृष्टि, 7. तकनीकी शिक्षा, 8. शिक्षक शिक्षा

आयाम :–

1. भारतीय भाषा अभियान, 2. भारतीय भाषा मंच, 3. शिक्षा स्वास्थ्य न्यास

कार्य–विभाग :–

1. प्रकाशन कार्य, 2. प्रचार–प्रसार कार्य, 3. महिला कार्य

विषय:–

चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास :– यह शिक्षा का आधारभूत विषय है, क्योंकि मूल्यपरक शिक्षा के अभाव में मनुष्य के चरित्र का निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास संभव नहीं है। सही अर्थों में शिक्षा में भारतीयता तभी आ सकती है, जब उसमें मूल्यबोध का समावेश हो। इसी को ध्यान में रखकर ''चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास'' विषय को न्यास ने आगे बढ़ाया है तथा निरंतर इस विषय की कार्यशालाओं का आयोजन कर रहा है। जिन संस्थाओं में इसें गम्भीरता से लागू किया गया है, वहां आश्चर्यजनक एवं आनंददायक परिणाम प्राप्त हुए ।

रीवा शहर तक कैसे पहुँचें :-

रीवा नगर सड़क, रेल और वायु मार्ग से सुगम रूप से जुड़ा हुआ है। सड़क मार्ग से यह सतना से मात्र 52 किमी दूर है, जहाँ से एक घंटे में पहुँचा जा सकता है। प्रयागराज (125 किमी) और जबलपुर (230 किमी) से रीवा चार-लेन सड़कों द्वारा जुड़ा है, जहाँ से क्रमशः लगभग दो घंटे और साढ़े तीन घंटे में पहुँचा जा सकता है।

रीवा रेल मार्ग से भी देश के प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है। यहाँ से 12 प्रमुख रेल गाड़ियाँ प्रारंभ होती हैं, जो नई दिल्ली, मुंबई, पुणे, भोपाल, इंदौर, जबलपुर, बिलासपुर, नागपुर, केवड़िया एवं राजकोट जैसे नगरों से सीधे जुड़ाव प्रदान करती हैं।

निकटतम हवाई अड्डे:-

हवाई अड्डा	दूरी (किमी में)
रीवा हवाई अड्डा, चोरहटा	8.72 किमी
खजुराहो हवाई अड्डा	143.1 किमी
लाल बहादुर शास्त्री हवाई अड्डा, वाराणसी	187.44 किमी
जबलपुर हवाई अड्डा	197.03 किमी
प्रयागराज हवाई अड्डे	141.9 किमी

महत्वपूर्ण तिथियाँ :-

कार्यक्रम विवरण	तिथि
पंजीयन की आखिरी तारीख	15 अगस्त 2025
सारांश (ABSTRACT)भेजने की आखिरी तारीख	15 अगस्त 2025
त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला	18, 19 एवं 20 अगस्त 2025

नोट :– कार्यक्रम स्थल पर पंजीयन शुल्क रु. 1600/– संकाय सदस्य, शिक्षाविद्, 1100 शोधार्थी, 500/– स्नातकोत्तर छात्र

Note:-

कार्यशाला में भाग लेने वाले स्थानीय एवं गैर-स्थानीय प्रतिभागियों को अपनी यात्रा एवं अन्य व्यय स्वयं वहन करने होंगे। विश्वविद्यालय इस संबंध में कोई आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु उत्तरदायी नहीं होगा।

मार्गदर्शक मण्डल :–

श्री ओम प्रकाश शर्मा

संचालक, शारदा ग्रुप झाबुआ (म.प्र.)
राष्ट्रीय संयोजक, आत्म निर्भर भारत शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली
एवं क्षेत्र संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास मध्य क्षेत्र

डॉ अजय तिवारी

कुलाधिपति, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
राष्ट्रीय संरक्षक, चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व का समग्र विकास शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

डॉ नीलेश पाण्डेय

प्राचार्य, हितकारिणी महिला महाविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)

डॉ सुखदेव बाजपेई

आचार्य, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

श्री संतोष मिश्रा

स्कूल शिक्षा विभाग जबलपुर (म.प्र.)

संरक्षक

प्रो. राजेन्द्र कुमार कुड़रिया

माननीय कुलगुरू
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

मुख्य समन्वयक

प्रो. सुरेन्द्र सिंह परिहार

कुलसचिव
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

संयोजक

प्रो. सुनील कुमार तिवारी

विभागाध्यक्ष
लाईफ लॉन्ग लर्निंग विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

समन्वयक

डॉ. अतुल कुमार तिवारी

विभागाध्यक्ष
पर्यावरण जीवविज्ञान विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

कार्यशाला से संबंधित सम्पर्क सूत्र :–

डॉ. नीलेश पाण्डेय – 9407001011, डॉ. रामभूषण मिश्र– 8052784757,
डॉ. श्रवण पाण्डेय– 9425959923, डॉ. ऊषा तिवारी– 9893884680